13. पालना करने की कला

(Art of Sustenance)

जिस व्यक्ति को खेती करने की कला आती है, वो जानता है कि बीज बोने के बाद खेत की सिंचाई भी करनी पड़ती है और जब थोड़े-थोड़े फूल-फल निकलने लगते हैं तो उनका पक्षियों से बचाव भी करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार कई क्रियायें अन्य प्रकार की भी करनी होती हैं जिनसे उत्पादन में रुकावट न हो और फ़सल पूरी तरह से उग पाये। थोड़े समय के बाद ज़मीन को खुरपा आदि साधनों से नरम भी करने की ज़रूरत होती है ताकि पौधे को हवा और नमी मिलती रहे। इसी प्रकार, जब हम किसी के मन में ज्ञान रूपी बीज बोते हैं अथवा उसकी बुद्धि में निश्चय की कलम लगाते हैं तो उस ज्ञान और निश्चय को अनेक प्रकार की आपदाओं से सुरक्षित रखना पड़ता है वरना कई कारण ऐसे उपस्थित होते हैं जिनसे कि मनुष्य के निश्चय की जड़ें कमज़ोर हो सकती हैं और उसमें ज्ञान का बीज फलीभूत होने से वञ्चित हो सकता है।

अन्यश्च, माता-पिता भी बच्चे के पैदा होने के बाद उसका ठीक रीति से लालन-पालन करते हैं ताकि वो कमज़ोर न रह जाये बल्कि उसका शरीर स्वस्थ, सन्तुष्ट और संवर्द्धित हो। ठीक इसी रीति से ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा मनुष्य को नया (आध्यात्मिक) जन्म देने के बाद उसके प्रति स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति, सहयोग के भाव की अभिव्यक्ति करना ज़रूरी होता है ताकि वो परिपक्व अवस्था को प्राप्त हो, वरना संसार में मनुष्य के जीवन में कई ऐसी घटनायें घटती हैं जिनसे उसकी आस्था कमज़ोर पड़ सकती है, उसका निश्चय हिल सकता है, उसकी योग-यात्रा में विघ्न उपस्थित हो सकते हैं और वो मनुष्यों से तो क्या, भगवान से भी रुष्ट हो सकता है और पुरुषार्थ को छोड़ कर फिर से माया का मुरीद बन सकता है। सांसारिक जीवन में चलते-चलते किसी के पति की मृत्यु हो सकती है, तो किसी के बच्चे को काल अकाले ले जा सकता है अथवा उसके सामने किसी अन्य

रूप में कष्ट या क्लेष उपस्थित हो सकता है। ऐसे अवसर पर जब कोई यह भली-भाँति समझ लेता है कि आत्मा का पति परमेश्वर है जो कि सदा अजर और अमर है और कि अनसूया बनकर परमात्मा ही को पुत्र रूप में अपनाया जा सकता है अथवा श्रीकृष्ण को ही दिव्यदृष्टि या दिव्यबुद्धि के आधार पर अपनी गोद में लिया जा सकता है तो उसे इस वेदना की परिस्थिति में सांत्वना मिल सकती है। इसी प्रकार, यदि ज्ञानमार्ग पर चलते-चलते कोई व्यक्ति जीवन में थकावट या बोरियत महसूस करता है और पुरुषार्थ छोड़कर घर बैठ जाता है तो उसमें फिर से उमंग-उत्साह लाने, उसे किन्हीं ज्ञानयुक्त एवं मनोरंजक कार्यक्रमों में शामिल होने तथा पुनः पुरुषार्थ के पथ पर चलने की प्रेरणा दी जा सकती है। ये सब सूक्ष्म रूप से ज्ञान, योग तथा सद्गुणों के द्वारा आत्मा की पालना करने की विधियाँ ही हैं।

कुछ ज्ञानवान आत्मायें कर्म करने में अधिक दिलचस्पी रखती हैं, उन्हें सेवा करना अच्छा लगता है। बैठ कर चित्त की एकाग्रता का अभ्यास करने की बजाय उन्हें निमित्त भाव से तन-मन-धन के द्वारा परोपकार के कार्यों में प्रवृत्त होना अधिक पसन्द होता है। ऐसे लोगों को सेवाकार्य में लगाये रखना भी उनकी पालना करना ही है।

कुछ लोग नयी-नई बातों को सोचना और करना चाहते हैं। वे नवीनता के बिना जीवन में नीरसता का अनुभव करते हैं। वे नयी योजना के बारे में सोचना चाहते हैं, कोई नयी रचना करना चाहते हैं। उनकी बुद्धि को चिन्तन में प्रवृत्त करना गोया उन आत्माओं की पालना करना है।

(i) स्थूल एवं सूक्ष्म प्रकार से मनुष्यात्माओं को पुरुषार्थ में आगे बढ़ाना, (ii) उनका सम्बन्ध ईश्वर से जोड़ना, (iii) उन्हें दैवी परिवार में निकट लाना, (iv) दिनोंदिन उनके विकास के लिए नये साधन एवं कार्यक्रम रचना, (v) समय और स्नेह के द्वारा उनके मन के बोझ को हल्का करना, (vi) उन्हें आत्मीयता का अनुभव कराना, (vii) उन्हें पूज्य बनने वालों की माला का मणका बनाना, (viii) परमपिता परमात्मा से पूरी रीति से विरासत लेने का अधिकारी बनाना, (ix) उनकी कमियों और कमज़ोरियों को दूर करने का यत्न करना, (x) दैवीगुणों से उनकी धारणा को सुदृढ़ करना, (xi) आध्यात्मिक शक्तियों से उन्हें शक्तिशाली बनाना— ये सब पालना करने के विभिन्न तरीके हैं। जिसे ये कला आती हो वो ही अनेक आत्माओं को आन्तरिक सुख देकर उन्हें माया के दुःख-दर्द से छुड़ा कर उनके आशीर्वाद अथवा उनकी दुआओं का भागी बनता है। उसे ही परमात्मा से अनेक वरदान प्राप्त होते हैं। जो रूहानियत और रूहाब से इस जन्म में आत्माओं की ऐसी पालना करता है, वो ही भविष्य में प्रजारंजक अथवा जनता का जनार्दन या राजाओं का राजा, मनुष्य से देवता बनता है।

इस कला का विकास मनुष्य में तब होता है जब उसके मन में यह भावना तीव्र रूप ले लेती है कि मैं अनेकानेक को सुख और शान्ति दूँ। देने वाला, 'दाता' ही ये पालना कर सकता है। जिसे लेने की धुन सवार हो वो भिखारी व्यक्ति दूसरों को भला कैसे पालना दे सकता है? पालना वो दे सकता है जिसमें दूसरों के प्रति स्नेह और सहानुभूति हो। जिसका व्यवहार क्रूर हो और मन सदा असन्तुष्ट एवं रुष्ट हो, वो भला दूसरों को कैसे पालना दे सकता है? अतः इस कला के लिए आवश्यकता इस बात की है कि (i) दूसरों के प्रति शुभभावना हो, आत्मीयता हो और सौहार्द हो और (ii) दातापन का भाव हो। जिसका हाथ सदा लेने की मुद्रा में हो वो पालना नहीं दे सकता। पालना वही दे सकता है जिसका हाथ सदा देने की मुद्रा में हो। परन्तु ये कला इतनी महत्त्वपूर्ण है कि जो इसमें निपुण हो जाता है वो दैवी राजाओं का भी राजा बनता है।

***